झारखण्ड (JAC) 2014 (A) बोर्ड परीक्षा में पूछे गये प्रश्न एवं उनके आदर्श उत्तर

Time : 3 Hours] निर्देश के लिए देखें 2015(A) प्रश्नोत्तर **[Full Marks : 100**

होता है। यह विवशता मन के अंदर से उपजी अनुभूति से जागती है, बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागती। जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता और अभिव्यक्त होने की पीड़ा नहीं अकुलाती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

खण्ड-क

1. नीचे दिये गये गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:

साहस की जिन्दगी सबसे बड़ी जिन्दगी होती है। ऐसी जिन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं? जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रान्ति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिलकुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चिय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, जिन्दगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े मौके पर साहस नहीं दिखाने वाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज सुनता रहता है। एक ऐसी आवाज जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज उसे बराबर कहती रहती है," तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।" सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुममें हिम्मत की कमी थी, कि तुममें साहस का अभाव था, कि तुम ठीक वक्त पर जिन्दगी से भाग खड़े हुए।

जिन्दगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और जिन्दगी को कोई मजा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में उसने जिन्दगी को ही आने से रोक रखा है।

भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुञ्जीथा ' जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का उपदेश ही नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन से जो आनन्द प्राप्त होता है, वह निराभोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1
(ख) किसे सबसे बड़ी जिन्दगी बताया गया है ? 1
(ग) उस जिन्दगी की सबसे बड़ी पहचान क्या है? 1
(घ) साहसी मनुष्य कौन होता है? 1
(ङ) झुण्ड में कौन लोग रहते हैं ? 1
(च) अर्नाल्ड बेनेट ने क्या लिखा है ? 1
(छ) जिन्दगी को ठीक से जीना क्या है? 1
(ज) भोजन का अलसी स्वाद किसे मिलता है ? 1
(झ) जीवन का भोग किस प्रकार करना चाहिए ? 1
(ञ) जिन्दगी का कोई मजा किसे नहीं मिलता है ? 1
(ट) 'साहस' का पर्यायवाची शब्द लिखिए। 1
(ठ) 'सांसारिक' शब्द का प्रत्यय अलग कीजिए। 1

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

एक समय था जब पानी सब जगह मिल जाता था। इसीलिए इसे कोई महत्व नहीं दिया जाता था। लेकिन तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या और जीवन शैली में आए परिवर्तन के कारण जल अब दुर्लभ हो गया है। इसी दुर्लभता के कारण जल का आर्थिक मूल्य बहुत बढ़ गया है। अब तक जल की प्रमुख माँग फसलों की सिंचाई के लिए होती थीं, लेकिन अब उद्योगों और घरेलू उपयोग के लिए भी जल की बहुत आवश्यकता है। इसीलिए जल अब एक बहुमूल्य संसाधन बन गया है। नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में पीने के पानी की माँग बिल्कुल अलग-अलग तरह की होती है। आइए, सबसे पहले नगरीय क्षेत्रों में जल की समस्या का अध्ययन करें।

नगरीय क्षेत्रों में सामान्यत: जल का एक ही स्रोत्र होता है और उसी से सभी की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। नगरीय क्षेत्रों में जल, झीलों या कृत्रिम जलाशयों या नदियों या नदी के तल में गहरे खोदे गए कुओं या नलकूपों से लाकर इकट्ठा किया जाता है। कभी-कभी जल के लिए, इन सभी स्रोतों का उपयोग किया जाता है। इन स्रोतों को लेकर पहले उसमें क्लोरीन जैसे रसायन मिलाकर उसे स्वच्छ किया जाता है। इसके बाद वह पीने के लिए सुरक्षित बन जाता है। ऐसा सुरक्षित जल नगर की संपूर्ण जनसंख्या को अनेक बीमारियों से बचाता है। नगरों में जल की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है क्योंकि जल का पीने के साथ-साथ सभी घरेलू कामों में उपयोग होता है। बहुत सारा जल

तो सीवर में जल-मल बहाने में लग जाता है। जैसे-जैसे नगरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे वहाँ पानी की कमी के कारण झुग्गी-झोपड़ियों के निवासियों को प्राय: बिना साफ किया हुआ गंदा पानी ही पीना पड़ता है। इसी कारण वहाँ प्राय: महामारियाँ फैल जाती हैं। नगरों में उद्योग के लिए भी जल की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है क्योंकि जल का पीने के साथ-साथ सभी घरेलू कामों में उपयोग होता है। बहुत सारा जल तो सीवर में जल-मल बहाने में लग जाता है। जैसे-जैसे नगरों की जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे वहाँ पानी की कमी के कारण झुग्गी- झोपड़ियों के निवासियों को प्राय: बिना साफ किया हुआ गंदा पानी ही पीना पड़ता है। इसी कारण वहाँ प्राय: महामारियाँ फैल जाती हैं। नगरों में उद्योग के लिए भी जल की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में पीने के पानी की आपूर्ति में कई दोष पाए जाते हैं। वहाँ पीने के सुरक्षित पानी का कोई स्रोत नहीं होता है। प्राय: जल के एक स्रोत का ही अनेक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है। उसी में बर्तन साफ होते हैं, आदमी और जानवर एक साथ नहाते हैं, कपड़े धोए जाते हैं और गंदगी भी बहाई जाती है। इसके अतिरिक्त भूमिगत जल कभी खारा होता है और कभी उसका रासायनिक संघटन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। इस पानी को स्वच्छ करके मानवीय उपयोग के लायक बनाने की कोई व्यवस्था भी नहीं होती।

(क) प्रस्तुत गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए 1
(ख) पहले सब जगह सुलभ पानी अब दुर्लभ क्यों हो गया है ? 1
(ग) आज जल एक बहुमूल्य संसाधन क्यों बन गया है ? 1
(घ) नगरों में पेयजल की व्यवस्था किस प्रकार की जाती है ? 1
(ङ) नगरों की झुग्गी-झोपड़ी बस्तियों में बीमारी का क्या कारण है ? 1
(च) ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल का अभाव क्यों है ? 1
(छ) 'उपयोग' का विलोम शब्द लिखिए। 1
(ज) 'जनसंख्या' कौन समास है ? 1

खण्ड-ख

3. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखें: 10

(क) भारतीय किसान :

(संकेत बिन्दु– भारत गाँवों का देश, परिश्रमी जीवन, कठिन संघर्ष, अनेकानेक समस्याएँ, समाधान का उपाय, उपसंहार)

(ख) विज्ञान– वरदान या अभिशाप :

(संकेत बिन्दु– 'विज्ञान' का अर्थ, विज्ञान के दो रूप– वरदान के रूप में, अभिशाप के रूप में, उपसंहार)

(ग) अच्छा स्वास्थ्य महा वरदान :

(संकेत बिन्दु– 'स्वास्थ्य' का अर्थ, अच्छा स्वास्थ्य क्या है ? स्वास्थ्य का महत्व, स्वास्थ्य वरदान के रूप में, उपसंहार)

4. झारखण्ड के किसी ऐतिहासिक स्थान का वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए। 5

अथवा, मलेरिया से बचाव हेतु अपने जिले के स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

खण्ड-ग

5. वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के भेदों (अकर्मक-सकर्मक) को लिखिए: 3

(क) हमलोग नहा रहे हैं। (ख) खिलाड़ी पुरस्कार पाता है।
(ग) लड़कों ने क्रिकेट खेला।

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय पदों से कीजिए: 3

(क) चीखों मत,..... बोलो।
(ख) अनुराग,..... सत्य बोलता है।
(ग) हमें अपनी सभ्यता..... संस्कृति पर गर्व है।

7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 3

(क) संयुक्त वाक्य का एक उदाहरण दीजिए।
(ख) यह वही शहर है, जहाँ मेरा भाई रहता है। (सरल वाक्य में बदलें)
(ग) जो सदा सत्य बोलता है, उसी की जीत होती है। (आश्रित उपवाक्य को अलग कीजिए)

8. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए: 3

(क) सिपाही ने चोर को पकड़ा। (कर्मवाच्य में बदलें)
(ख) छत पर कैसे सोओगे ? (भाववाच्य में बदलें)
(ग) आपको सूचित किया जाता है। (यह वाक्य किस वाच्य में है ?)

9. (क) 'देशभक्त' का समास विग्रह करें। 1
(ख) 'कृष्णार्जुन' कौन समास है ? 1
(ग) 'उत्तर' के दो भिन्न अर्थ लिखें। 1

खण्ड-घ

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 6

छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ ?
क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ ?
सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा ?
अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौर व्यथा।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।
(ख) 'छोटे से जीवन' और 'बड़ी कथाएँ' का क्या आशय है ?
(ग) कवि ने किस प्रकार अपनी विनम्रता प्रकट की है ?
(घ) 'मौन व्यथा' का अर्थ लिखिए।

अथवा, मां ने कहा पानी में झाँककर अपने चेहरे पर मत रीझना आग रोटियाँ सेकने के लिए है जलने के लिए नहीं वस्त्र और आभूषण शब्दिक भ्रमों की तरह बंधन हैं स्त्री जीवन के माँ ने कहा लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।
(ख) आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी मत दिखाई देना ?
(ग) वस्त्र और आभूषण को स्त्री जीवन का बन्धन क्यों कहा गया है ?
(घ) माँ ने अपनी कन्या को अपने चेहरे पर रीझने के लिए क्यों मना किया?

11. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3×3=9

(क) परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए ?

(ख) कवि देव ने 'श्री ब्रजदूलह' किसके लिए प्रयुक्त किया है और उन्हें संसार रूपी मन्दिर का दीपक क्यों कहा है ?

(ग) 'अट नहीं रही है' कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है ?

(घ) बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अन्तर है ?

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5

(क) "साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है।" इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

(ख) सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाते हैं तब उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं ?

अथवा

(क) 'छाया मत छूना' कविता का संदेश क्या है ?
(ख) 'उत्साह ' कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है ?

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 6

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फादर का उसके मुख मे पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी- जैसे किसी उँचाई पर देवदारु की छाया में खड़े हों।

(क) पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
(ख) 'परिमल' के दिन से लेखक का क्या आशय है ?
(ग) फादर परिमल के सदस्यों के साथ कैसा संबंध रखते थे ?

(घ) लेखक ने फादर को देवदारु की छाया-सा क्यों कहा है?

अथवा, आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो इतना तो समझ में आता ही है क्या तो उस समय मेरी उम्र थी और क्या मेरा भाषण रहा होगा। यह तो डॉक्टर साहब का स्नेह था जो उनके मुँह से प्रशंसा बनकर बह रहा था या यह भी हो सकता है कि आज से पचास साल पहले अजमेर जैसे शहर में चारों ओर से उमड़ती भीड़ के बीच एक लड़की का बिना किसी संकोच और झिझक के यों धुआँधार बोलते चले जाना ही इसके मूल में रहा हो पर पिता जी ! कितनी तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे वे। एक ओर विशिष्ट बनने और बनाने की प्रबल लालसा तो दूसरी ओर अपनी सामाजिक छवि के प्रति भी उतनी ही सजगता। पर क्या यह संभव है ? क्या पिता जी को इस बात का बिलकुल भी अहसास नहीं था कि इन दोनों का तो रास्ता ही टकराहट का है ?

(क) पाठ तथा लेखिका का नाम लिखिए।

(ख) कौन-से दो रास्ते टकराव के कारण बनते हैं ?

(ग) लेखिका के पिताजी का अंतर्विरोध क्या था ?

(घ) लेखिका ने स्वतंत्रता-आंदोलन में किस प्रकार योगदान किया ?

14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3 × 3 = 9

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

(ख) बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी ?

(ग) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा गया है ?

(घ) आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है ? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे ?

15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5

(क) पठित पाठ के आधार पर बताइए कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है।

(ख) आपके विचार से फादर बुल्के ने भारत आने का मन क्यों बनाया होगा ?

अथवा

(क) 'नेताजी का चश्मा' पाठ का क्या संदेश है ?

(ख) "'बिस्मिल्ला खाँ' मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।"सिद्ध करें।

16. 'और देखते ही देखते नयी दिल्ली का काया पलट होने लगा'– नयी दिल्ली क .....लिए क्या-क्या प्रयत्न किए गए होंगे ? 4

अथवा

जितेन नागें की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या-क्या गुण होते हैं।

17. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए: 3×2=6

(क) आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

(ख) अखबारों ने जिन्दा नाक लगने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया ?

(ग) गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया है?

(घ) 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा !' का प्रतीकार्थ समझाइए।

उत्तर

खण्ड–'क'

1. (क) शीर्षक–'साहस की जिंदगी'

(ख) साहस की जिंदगी को सबसे बड़ी जिंदगी बताया गया है। इसकी पहचान यह है कि बिल्कुल निडर और बेखौफ होती है।

(ग) साहसी मनुष्य वह होता है जो दूसरों की चिंता नहीं करता। वह जनमत की उपेक्षा करके जीता है।

(घ) झुंड में चलना और चरना भैंस और भेड़ों का काम है। शेर तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मग्न रहता है।

(ङ) अर्नाल्ड बेनेट ने लिखा है वही आदमी सुखी रह सकता है जो जिंदगी की चुनौती को कबूल करता है। और किसी निश्चय के समय साहस से काम लेता है।

(च) जिंदगी को ठीक से जीना हमेशा जोखिम झेलना है। जोखिम से बचने वाले आदमी को जिंदगी का मजा नहीं मिल पाता।

(छ) भोजन का असली स्वाद मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता हो।

(ज) जीवन का भोग त्याग के साथ करना चाहिए। संयम के साथ भोग करने पर जो आनंद मिलता है वह निरा भोगी को नहीं मिल सकता।

(झ) बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती हैं। उनका विकास मुसीबतें झेलने के पश्चात् होता है।

(ञ) अकबर इसलिए महान बन सका क्योंकि उसका जन्म रेगिस्तान में हुआ था। वह अभावों के मध्य पलकर बड़ा हुआ था।

(ट) पांडवों के पास वीरों की संख्या कम थी फिर भी उन्हें जीत हासिल हुई क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी और वनवास के जोखिम को पार किया था।

(ठ) सांसारिक – इक (प्रत्यय), अभाव – अ (उपसर्ग)।

2. (क) जल का महत्व

(ख) जलवायु परिवर्तन एवं जनसंख्या वृद्धि के कारण।

(ग) उद्योग धंधा, एवं सिंचाई के साथ घरेलु उपयोग एवं पीने के योग्य जल अदि के लिए जरुरी संसाधन बन गया।

(घ) नदी, झील या भूमिगत जल को इकट्ठा कर उसे मशीन द्वारा घर-घर सप्लाई किया जाता है।

(ङ) नगरों में झुग्गी झोपड़ी के गंदे पानी पीने से बिमार पड़ते है।

(च) जल का एक स्त्रोत से अनेक उद्देश्यों की पूर्ती की जाती है।

(छ) दुरूपयोग

(ज) तत्पुरुष समास

खण्ड–'ख'

3. (क) **भारतीय किसान** : भारतीय किसान स्वभाव से ही सीधे-सादे और निश्छल होते हैं । ईमानदारी इनके जीवन का अलंकार है । ये ईश्वर पर अटूट विश्वास और श्रद्धा रखते हैं ।

भारतीय कृषकों की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है । 'भारतीय कृषक' कहने से ही ऐसे कृषकों का स्वरूप उभरता है जो खेती पर अवलंबित होते हैं और जैसे-तैसे अपने जीवन का निर्वाह कर लेते हैं । वैसे, भारत में ऐसे कृषक हैं, जो सैकड़ों एकड़ जमीन के मालिक होते हैं और जो आर्थिक दृष्टि से विपन्न नहीं होते । पर, इनकी संख्या बहुत ही कम है । भारत में उन्हीं किसानों की संख्या अधिक है जिनके पास अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए भी पर्याप्त जमीन नहीं होती । ये लोग बटाई या मालगुजारी पर जमीन जोतते हैं । यह कितने दुःख की बात है कि सारे देश को खिलानेवाला किसान खुद बिना खाए सो जाए । दूसरों के शरीर ढँके और खुद नंगा रहे । सुबह से शाम तक इनका जीवन कठिन परिश्रम और कठोर साधना का जीवन है । इतनी मेहनत, इतनी परेशानी, इतनी उलझन के बाद भी ये जो कुछ उत्पादन करते हैं, उससे इसके परिवार की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पातीं । भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर ही अवलंबित है । यदि कृषक ही भूखे रहे तो देश की अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ होने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

भारतीय कृषकों की वर्तमान दशा अत्यन्त शोचनीय और दयनीय है । इनका जीवन-स्तर देखकर भला किसे तरस नहीं आएगा ! न सोने का ठीक, न कुछ सोचने का–इनकी जीवन गाड़ी चल रही है उसी पुरानी लीक पर, बिना किसी लक्ष्य के । ये खेती क्या करते हैं, खेती के साथ जुआ खेलते हैं । ये कर्ज में पैदा होते हैं, कर्ज में जीते हैं और कर्ज में ही मर जाते हैं । ये मरकर कर्ज का बोझ अपनी संतान के कंधों पर डाल जाते हैं । 1963 ई. में देश में 'हरित-क्रांति' ने किसानों की आर्थिक स्थिति में बहुत सुधार किया है । इधर सरकार की ओर से इन्हें खाद पर सब्सिडी (राज्य की ओर से प्रदत्त अर्थ-सहाय्य) के चलते अब किसानों की आर्थिक स्थिति सुधर रही है और इनका जीवन-स्तर धीरे-धीरे सुधर रहा है । परन्तु इस क्षेत्र में और भी सुधार किया जाना आवश्यक है ।

10–06–2014

4. प्रिय मित्र,

राँची से लौटने पर तुम्हारा पत्र मिला । घर पर सभी सकुशल है, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई ।

मैं छात्रों के साथ घूमने चला गया था। लगभग एक सप्ताह का कार्यक्रम था। सातों दिन हमलोग राँची और राँची के आस-पास के दर्शनीय स्थलों का परिभ्रमण करते रहे। बड़ा आनंद आया।

राँची शहर के बीच टैगोर हिल और राँची हिल नाम की दो पहाड़ियाँ हैं इन पर चढ़ने के बाद सारे सहर का दृश्य बड़ा ही आकर्षक लगता है। राँची के काँके डैम की निराली शोभा देखकर हम विमुग्ध हो गए। सारे राँची शहर में इसी डैम से जलापूर्ति की जाती है। पानी शुद्ध करने के लिए बड़ी-बड़ी मशीनें लगी हैं। हमलोग हटिया भी गये। वहाँ वर्षों पूर्व भारी मशीनों का कारखाना था। हटिया के पास ही जगन्नाथपुरी है जहाँ जगन्नाथपुरी का भव्य मंदिर है। हमलोगों ने इस मंदिर का अवलोकन किया। राँची से हमलोग हुंडरू और जोन्हा फौल भी देखने गए। दोनों जलप्रपातों को देखकर हमलोग निहाल हो उठे। हरी-भरी पहाड़ियों से झरते झरनों के दृश्य तो पूरी यात्रा में हम देखते रहे और हमारी आत्माएँ तृप्त होती रहीं।

तुम्हारा मित्र
अजय

अथवा,

सेवा में,

जिला स्वास्थ अधिकारी राँची,
विषय : मलेरिया से बचाव हेतु

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मै राँची जिले का निवासी हूँ, हमारे मुहल्ले में लगभग दो सप्ताह से मलेरिया का प्रकोप वढ़ गया है। मलेरिया का प्रकोप का मुख्य कारण है मच्छर का अत्यधिक संख्या में बढ़ना, अगर इस मोहल्ले में D.D.T तथा अन्य किटनाशक दवाईओं का छिड़काव किया जाय तो मच्छर कि संख्याओं में कमी आयेगी साथ-ही-साथ मलेरिया में बहुत कमी हो जायेगा।

अत: विनम्र निवेदन है कि इन सारी समस्याएँ पर गंभीरता से विचार किया जाय। और जल्द से जल्द समस्या का समाधान किया जाए।

आपका विनीत
सुजीत कुमार
राँची रोड बुटी

खण्ड–'ग'

5. (क) अकर्मक क्रिया, (ख) सकर्मक क्रिया, (ग) सकर्मक क्रिया
6. (क) धीरे (ख) हमेशा (ग) और
7. (क) मैंने एक आदमी को देखा जो बहुत बीमार था।
   (ख) मेरा भाई इसी शहर में रहता है।
   (ग) जो सदा सत्य बोलता है।
8. (क) सिपाही द्वारा चोर पकड़ा गया
   (ख) छत पर कैसे सोया जाएगा।
   (ग) कतृवाच्य
9. (क) देश का भक्त (ख) द्वन्द समास
   (ग) दिशा सूचक एवं प्रश्न का जबाव

खण्ड–'घ'

10. (क) जयशंकर प्रसाद, आत्मकथा
    (ख) इस कविता में जयशंकर प्रसाद का कहना है कि जीवन छोटा है पर दुख और बिडमनाओं की कहानीयाँ बहुत बड़ी-बड़ी है।
    (ग) कवि ने स्वयं की जीवन की कहानी को सामान्य व्यक्ति की कहानी बताएँ।
    (घ) कवि ने मौन व्यथा का अभिप्राय है कि दुनिया में अनेकों व्यक्ति है जिनके पास केवल दुख ही दुख है हमें मौन रहकर दूसरो के दुख सुनना चाहिए।

अथवा,

(क) कवि – ऋतुराज, **कविता** – कन्यादान।

(ख) माँ कन्यादान के समय बेटी से कहती है कि तुम लड़की होते हुए भी लड़की जैसी मत दिखाई देना। माँ द्वारा ऐसा कहने का भाव यह है कि वह लड़कियों की तरह सौंदर्य व कोमलता के गुणों से युक्त होते हुए भी सामाजिक मान्यता के अनुरूप 'अबला' न बने। समाज-व्यवस्था द्वारा स्त्री के प्रति भेदभावपूर्ण बंधनों को वह कभी स्वीकार न करे। वह दृढ़तापूर्वक अपने प्रति किए जाने वाले अन्याय का सामना करे, कभी भी दुर्बलता न प्रकट करे।

(ग) स्त्री के लिए वस्त्र और आभूषण उसके सौंदर्य को बढ़ाने वाले साधन हैं। समाज उसकी सुंदरता और कोमलता के कारण ही उसके लिए आचरण के प्रतिमान गढ़ देता है। स्त्री को आदर्श के आवरण में कैद कर दिया जाता है। वस्त्र-आभूषण स्त्री को पुरुष से अलग करते हुए उसके कोमल स्वरूप की पहचान बन जाते हैं। इस प्रकार वे ही उसके बंधन का कारण कभी बन जाते हैं। इसीलिए इन्हें स्त्री जीवन का बंधन कहा गया है।

(घ) माँ ने बेटी को घेहरे पर रीझने के लिए इसलिए मना किया क्योंकि बहुएँ प्राय: अपनी मुखाकृति की सुन्दरता पर रीझकर हर प्रकार के कष्ट झेल लेती हैं। इस प्रकार वे अपने हर बंधन निभा लेती हैं तथा अपना शोषण करा लेती हैं।

11. **(क)** परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर तर्क दिये कि हमने बचपन में बहुत-सी धनुहियाँ तोड़ी हैं। हमारी समझ में सभी धनुष एक जैसे हैं। इस पुराने धनुष के तोड़ने में तो किसी तरह की लाभ-हानि की बात समझ में नहीं आती है। श्रीरामचंद्र जी ने तो इसे नये के भ्रम से छूआ मात्र था कि यह टूट गया। इसमें उनका कोई दोष नहीं है।

(ख) कवि ने 'श्री ब्रजदूली' श्री कृष्ण के लिए प्रयुक्त किया है। उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा गया है क्योंकि जिस प्रकार मंदिर का दीपक मंदिर में उजाला फैलाता है ठीक उसी प्रकार श्री कृष्ण संसार रूपी मंदिर में लोगों के सहायक, आस्था और विश्वास रूप में प्रकाशवान हैं।

(ग) 'अट नहीं रही है' कविता में कवि 'निराला' ने प्रकृति की वासंतिक सुन्दरता का व्यापक वर्णन किया है। उसे हर जगह छलकता हुआ दिखाया है। 'कहीं साँस लेते हो', का आशय है कि मादक हवाएँ चल रही हैं। घर-घर में भरने के भी अनेक रूप हैं। शोभा का भरना, फूलों का भरना, खुशी और उमंग का भरना। 'उड़ने को पर-पर करना' भी ऐसा सांकेतिक प्रयोग है, जिसके विस्तृत अर्थ हैं।

(घ) बच्चे की मुस्कान और एक बड़े व्यक्ति की मुस्कान में अंतर–
- बच्चे की मुस्कान में स्वाभाविकता होती है, जबकि बड़े व्यक्ति की मुस्कान उतनी स्वाभाविक नहीं होती। कभी-कभी वह एकदम ही कृत्रिम होती है।
- बच्चे की मुस्कान पूर्णतया निश्छल होती है। इसके विपरीत बड़े लोगों की मुस्कान में अवसर का ध्यान होता है।
- बच्चे की मुस्कान में उनमुक्तता होती है, जबकि बड़ा व्यक्ति परिस्थिति के अनुसार बँधी हुई मुस्कान ही बिखेर पाता है।
- बच्चे के मुखड़े की कोमलता व सुंदरता के बीच उसकी मुस्कान दिव्य सौंदर्य से परिपूर्ण होती है। बड़े व्यक्ति की मुस्कान में वह नैसर्गिक सुंदरता नहीं होती।
- बच्चे की मुस्कान के बीच उसके नन्हें-नन्हें दूधिया दाँत उसे अत्यंत आकर्षक व मोहक बना देते हैं बड़ों की मुसकान में वह आकर्षण नहीं होता।
- बच्चे की मुस्कान सभी को प्रभावित करने में सक्षम होती है। बड़े लोगों की मुस्कान में ऐसी क्षमता नहीं होती।

12. **(क)** व्यक्ति अपने साहस और शक्ति के माध्यम से जीवन में संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है। वह अपने सामर्थ्य के अनुसार परिस्थितियों से जूझता है और उन पर सफलता प्राप्त करता है। किन्तु सभी जगह केवल साहस और बल काम नहीं आते हैं। यदि मनुष्य के स्वभाव में विनम्रता भी सम्मिलित है तो वह सोने पर सुहागे का काम करती है और मनुष्य प्रतिकूल एवं आवेशमय परिस्थितियों से सहजता से गुजर जाता है और अपने ध्येय में सफल हो जाता है।

(ख) • सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब व्यक्ति लड़खड़ाने लग जाता है।

कई बार वह जिस तरह का प्रदर्शन करना चाहता है, वैसा कर नहीं पाता। अनेक बार उसे अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद उचित सफलता नहीं मिलती। इन परिस्थितियों में वह निराश होने लगता है।

• उस समय उसके सहयोगी ही उसे सँभालने का कार्य करते हैं। वे उसके प्रदर्शन को सुधारने में मदद करते हैं, साथ ही उसका मनोबल भी बढ़ाते हैं।

अथवा,

(क) छाया को छूने से कवि का आशय है, विगत के सुखों को याद करना। कवि छाया को छूने अर्थात् विगत के सुखों को याद करने से इसलिए मना करता है क्योंकि पुराने सुखद क्षणों की याद वर्तमान के दुख को दुगुना कर देता है।

जब मनुष्य अपने बीते हुए सुख के दिनों को याद करते समय अपने वर्तमान के दुख को देखता है, तब वह उन सुनहरे क्षणों से आज के समय की तुलना करने लग जाता है। उस समय उसका वर्तमान का दुख और भी गहरा हो जाता है।

(ख) उत्साह से अभिप्राय उमंग, जोश से है। कविता का शीर्षक 'उत्साह' एक तरफ तो बादलों को उमड़ा हुआ देखकर प्रसन्न होने वाले प्राणियों की उमंग को प्रकटकर रहा है। दूसरी तरफ सामाजिक क्रान्ति या बदलाव के फलस्वरूप लोगों में छाए जोश के लिए व्यक्त हुआ है।

13. (क) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(ख) लेखक और उसके साथियों ने मिलकर 'परिमल' नामक साहित्यिक संस्था बनाई थी। उसमें फादर बुल्के भी सम्मिलित थे। लेखक को 'परिमल' के दिन इसलिए याद आते थे, क्योंकि उसमें सभी एक पारिवारिक रिश्ते की तरह आपस में बँधे थे और में सबसे बड़े फादर बुल्के ही थे, जो उनलोगों का पथ-प्रदर्शन करते थे।

(ग) फादर ने सभी सदस्यों का एक परिवारिक रिस्ते की तरह आपस मे बाँध रखा था।

(घ) देवदार वृक्ष आकार में लम्बा चौड़ा और संघन होकर शीतल छाया प्रदान करता है उसी तरह फादर ने भी सभी को परिवार का छाया देने का काम किया।

अथवा

(क) मानवीय करुणा की दिव्य चमक, लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी हैं।

(ख) लेखिका के पिता लेखिका को 'विशिष्ट' बनाने की प्रबल लालसा रखते थे, साथ ही उसे सामान्य घरेलू लड़की के रूप में रखते हुए अपनी सामाजिक छवि को भी बनाए रखने के प्रति सजग थे। इस प्रकार ये दोनों ही रास्ते एक-दूसरे के विपरीत थे। घर की चारदीवारी में सीमित लड़की का 'विशिष्ट' छवि वाली बनना असंभव था।

(ग) माँ के अंदर अत्यधिक सहनशक्ति थी, उनमें धैर्य भी बहुत था। परंतु ये गुण पिता के गुणों के बिलकुल विपरीत थे, क्योंकि पिता बेहद क्रोधी व अहंवादी थे। जबकि लेखिका के विचार में इस तरह के कार्यकलाप तो उसे विशिष्ट ही बनाते थे। इस प्रकार उसके पिता अंतर्विरोधों के बीच जीते थे।

(घ) वे पुरे दमखम और जोश खरोश के साथ देश की स्वत्रंता आदोंलन मे कुद पड़े प्रभात फेरिया, हड़ताले, जुलूस कर नौजवानों में जान फुक दिया।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता-आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था। वह नेताजी की मूर्ति को बार-बार चश्मा पहनाकर देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करता था। देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके हृदय में किसी भी सेनानी या फौजी से कम नहीं थी। इसी कारण लोग उसे कैप्टन कहते थे।

(ख) • बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए बन गई थी, क्योंकि वे जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का अत्यंत सफाई से पालन करते हुए उन्हें अपने आचरण में उतारते थे।

• उदाहरण के लिए किसी की चीज को नहीं लेना उनका सिद्धांत था। इस नियम को वे इतनी बारीकी तक ले जाते कि दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते थे। यह देखकर लोगों को आश्चर्य होता था।

(ग) पारंपरिक अवधी लोकगीतों एवं चैती में शहनाई का उल्लेख बार-बार मिलता है। शहनाई को मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला वाद्य माना गया है। इसका प्रयोग इन जगहों पर मांगलिक विधि-विधानों के अवसर पर ही होता है। उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ शहनाई वादन के क्षेत्र में अद्वितीय स्थान रखते हैं। इसी कारण उन्हें शहनाई की मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

(घ) आग की खोज को एक बहुत बड़ी खोज इसलिए माना गया है क्योंकि इसने मनुष्य को खाना पकाना सिखाया आजकल प्रत्येक घर में चूल्हा जलता है। इस खोज के पीछे सम्भवतः पेट की आग को शांत करने की प्रेरणा मुख्य स्रोत रही होगी।

15. (क) बालगोबिन भगत में साधु की सभी विशेषताएँ थीं। वे कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के द्वारा बताए गए आदर्शों का पालन करते थे और उन्हीं के गीतों को गाते थे। उन्हीं के आदर्शों पर चलते हुए वे न तो झूठ बोलते थे और न ही किसी से झगड़ा करते थे। सबसे उचित व्यवहार करते थे। न तो दुसरों से पूछे बिना किसी की चीज को उपभोग में लाते थे और न ही किसी के खेत में शौच आदि के लिए बैठते थे। एक अन्य प्रसंग से भी उनकी कबीर के प्रति श्रद्धा व्यक्त होती है। उनके खेत में जो कुछ भी पैदा होता उसे सिर पर लादकर अपने 'साहब' के दरबार में ले जाते और भेंटस्वरूप रखने के बाद जो कुछ प्रसाद के रूप में मिलता उसी से गुजारा करते।

(ख) हमारे विचार में फादर बुल्के ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता से प्रभावित होकर भारत आने का मन बनाया होगा। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारत की संस्कृति ज्ञान, त्याग, अहिंसा, धर्म और शांति की संस्कृति है। यह देश ऋषि-मुनियों, धर्म-प्रवर्त्तकों तथा महान कवियों का देश है।

अथवा,

(क) नेताजी का चश्मा' पाठ एक रोचक कहानी है। इसमें लेखक ने यही बताना चाहा है कि देशभक्ति का संबंध मन की भावना से होता है। उसके लिए न फौजी होना जरूरी है, न शरीर से शक्तिशाली होना। कोई भी मनुष्य, चाहे वह बच्चा हो या बूढ़ा, देशप्रेमी हो सकता है। यदि कोई मनुष्य अपने महापुरुषों के सम्मान के लिए छोटा-सा भी त्याग करता है तो वह देशभक्त है। इस कहानी में यह भी दिखाया गया है कि देशभक्ति की भावना छोटे-से-छोटे कस्बे में भी दिखाई देती है।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ काशी के बालाजी के मंदिर के नौबतखाने में शहनाई बजाने का रियाज किया करते थे। वे काशी के संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित पाँच दिवसीय संगीत-सभा में अवश्य सम्मिलित होते थे। बिस्मिल्ला खाँ की काशी विश्वनाथ जी के प्रति अपार श्रद्धा थी। वे जब भी काशी से बाहर रहते थे तब विश्वनाथ जी व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे। थोड़ी देर तक उनके लिए शहनाई बजाते थे, इसके बाद ही कार्यक्रम शुरू करते थे। वे अक्सर कहते थे कि मेरे लिए काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं है। यहाँ गंगा मइया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मंदिर हैं। बिस्मिल्ला खाँ मुहर्रम के अवसर पर पूरे दस दिन तक हजरत इमाम हुसैन एवं उनके कुछ वंशजों के प्रति शोक मनाते थे। उन दिनों वे कोई राग-रागिनी नहीं बजाते थे और न ही किसी संगीत के कार्यक्रम में भाग लेते थे।

16. (i) सड़कों की मरम्मत कर उन्हें सुविधाजनक और चमकदार बनाया होगा। (ii) सड़कों के किनारे और पार्कों के पेड़ों की काँट-छाँट कर आकर्षक बनाया होगा। (iii) पूरे शहर में सफाई की होगी और सजावट की होगी। (iv) सरकारी इमारतों पर रंग-रोगन किया होगा, सफाई की होगी तथा सभी सुविधा की सामग्री उपलब्ध कराई होंगी। (v) सरकारी लॉनों तथा पार्कों की हरी घास को काँट-छाँट कर चमकाया होगा।

अथवा

जितेन नार्गे बहुत ही कुशल ड्राइवर है। वह नेपाल का रहने वाला है। वह एक कुशल गाइड की तरह गंतोक के बारे में बताता है। जब लेखिका एक स्थान पर मुग्ध हो ठहर जाती है तो वह उसे समझाता है कि आगे इससे भी सुन्दर स्थान है। वह लांग स्टॉक के व्हील के बारे में बताता है। जब लेखिका पहाड़िनों को देख उदास हो जाती है तब वह उसे उसका लक्ष्य ध्यान दिलाता है। वह नेपाल में हुई हिंसक घटनाओं तथा माओवादियों की भी पूरी खबर रखता है। इस प्रकार जितेन की तरह गाइड को बहुमुखी प्रतिभा का धनी, कर्त्तव्य निभाने वाला, अनुभवी तथा देश के प्रति सजग होना चाहिए। यह जितेन का अनुभवी होने का फायदा था, जो सैलानियों की गाड़ी को इतनी धुंध में भी अंदाज से चला लाया था। इस सबके अलावा गाइड को हर स्थान का सूक्ष्म ज्ञान भी होना चाहिए।

17. (क) बालक का स्वभाव होता है अपने हमजोली देखकर उन्हीं के साथ रहना, घूमना-फिरना, खेलना पसन्द करता है। बालक भोलानाथ जब अपने पिता की गोद में सिसक रहा था। रास्ते में उसे अपने मित्र दिखाई देते हैं तो अचानक उसका सिसकना बन्द हो जाता है और अपने पिता की गोद से उतरकर अपने मित्रों के पास जाने की इच्छा व्यक्त करता है। भोलानाथ भी अपने मित्रों के साथ खेलना चाहता है।

(ख) इस खबर को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया– ''जॉर्ज पंचम के जिन्दा नाक लगाई गई है....यानी ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती। इसके अलावा कोई खबर नहीं छपी जैसे स्वागत की, समारोह की तथा उद्घाटन की। यह नाक का विरोध करने का एक ढंग था।

(ग) गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' इसलिए कहा गया क्योंकि यहाँ के लोगों को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। पहाड़ी क्षेत्र के कारण पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना पड़ता है, पत्थरों पर बैठकर औरतें पत्थर तोड़ती हैं। उनके हाथों में कुदाल व हथौड़े होते हैं। कइयों की पीठ पर बँधी टोकरी में उनके बच्चे भी बँधे रहते हैं। उनका मातृत्व व श्रम साधना साथ-साथ देखी जा सकती है। यहाँ की पहाड़िनें ही रास्ता बनाती युवतियाँ बोकु पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ती हैं। बच्चे भी अपनी माँ के साथ काम करते हैं। अतः गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' कहते हैं।

(घ) दुलारी को जब अमन सभा में नाचने-गाने के लिए टाऊन हॉल बुलाया गया तो वह उसी धोती में आई जो टुन्नू ने उसे दी थी। उसने दर्द भरे गले से गाया। 'एही ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा; कासों में पूछूँ' का प्रतीक अर्थ है–'हे राम ! इसी स्थान पर मेरी नाक की लौंग खो गई है, मैं किससे पूछूँ।' हिन्दू समाज में लौंग या नथनी का सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसका आशय टुन्नू की मौत से है। दुलारी गाती है तब उसकी निगाह वहीं पर टिकती है जहाँ अली सगीर ने टुन्नू को बूट से ठोकर मार कर उसकी हत्या कर दी थी। टुन्नू दुलारी से प्रेम करता था और दुलारी भी उसे दिल से चाहती थी। दुलारी टुन्नू को ही लौंग या सुहाग का प्रतीक मानकर यह गीत गाती है।